International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 08-01-2021, Accepted: 24-02-2021, Published: 10-04-2021
Volume 7, Issue 2, 2021, Page No. 65-68

पटरंगपुर पुराण में आंचलिकता के विविध आयाम

डॉ. शिप्रा श्रीवास्तव सागर
सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, वल्लभ राजकीय महाविद्यालय, मण्डी, हिमांचल प्रदेश, भारत

सारांश
आंचलिकता की परिपक्वता जीवन की समग्रता में है। शाब्दिक अर्थ के अंतर्गत आंचलिकता– संज्ञा स्त्रीलिंग {संस्कृत आंचलिक् ता (प्रत्यय)}, क्षेत्र विशेष संबंध रखने वाली स्थिति। प्रत्येक उपन्यास में स्थानीयता का रंग तो रहता ही है परंतु आंचलिक उपन्यास में उस अंचल की संस्कृति– वेशभूषा इत्यादि की एक गहरी छाप होती है तथा भाषा का महत्वपूर्ण प्रभाव भी दिखाई देता है। आधुनिक युग में नव्यतर विधाओं के संदर्भ में आंचलिकता एक दिशा की उपलब्धि हैं। व्यष्टि सत्य और समष्टि सत्य का उपन्यासों के धरातल पर दो रूपों में विकास हुआ है। व्यष्टि सत्य को विद्वानों ने मार्क्स, फ्रायड, एडलर, युंग, सार्त्र आदि की वैचारिक भूमिका पर ग्रहण किया तो समष्टि सत्य की चुनौतियों को 'आंचलिकता' ने स्वीकार किया है। आंचलिकता के स्वरूप निर्धारण, उद्घाटन, प्रस्तुतीकरण आदि में अनेक तत्वों का सामूहिक योगदान होता है। 'पटरंगपुर पुराण' में भी आंचलिकता के अनेक तत्वों का समावेश है। स्वभाविकता तथा वातावरण की सजीवता पटरंगपुर पुराण की एक प्रमुख विशेषता है जो इसे आंचलिकता के और भी करीब ले आता है।

मूलशब्द: आंचलिक–परिवेश विशेष, चतुर्भुज–चारों ओर, पर्वतीय अंचल–पहाड़ी परिवेश, संयुक्त–जुड़ा हुआ, विविधता–अलग–अलग स्वरुप

प्रस्तावना

आंचलिक का अर्थ विशिष्ट है, और वह एक प्रकार की अनिवार्यता की उपज है। आंचलिकता का अर्थ बहुत से लोग स्थानीय रंगत से लगाते हैं, यह भी भ्रम है। स्थानीय रंग तो प्रायः सभी उपन्यासों में होता है। कथा जिस प्रदेश में बहती है वहां की प्रकृति, वेशभूषा इत्यादि की रंगत लेखक उपन्यास में देता चलता है। आंचलिक उपन्यास अंचल के समग्र जीवन का उपन्यास है। संपूर्ण अंचल अपनी विविधता तथा समग्रता के साथ आंचलिक उपन्यास का नायक होता है। अंचल को देखना यानी उसके समग्र जीवन को देखना है। जीवन जितना बाहर है उतना या उससे कहीं अधिक भीतर भी है। दोनों एक–दूसरे से संयुक्त हैं। एक परिपक्व आंचलिक उपन्यास जीवन को बाहर–भीतर से सम्पूर्ण सामंजस्य से देखना चाहता है। देहाती अंचल, वन्य अंचल, पहाड़ी अंचल आदि में मानव–जीवन और प्रकृति का बड़ा गहरा संबंध दिखाई पड़ता है। आंचलिक उपन्यास के रूप और स्वर की यदि चर्चा करें तो कह सकते हैं कि उपन्यास की गति एक दिशा में नहीं चारों दिशाओं में होती है। अंचल की विविधता को रूप देने के लिए लेखक कभी इस कोण पर खड़ा होता है तो कभी दूसरे कोण पर। अनेक पात्रों के होते हुए भी प्रत्येक पात्र का सत्ता महत्व होता है।

आंचलिक उपन्यास एक दिशा में खोने की अपेक्षा पूरे अंचल की चतुर्भुज यात्रा करता है। वे उन महत्वपूर्ण उपादानों को चुनता है जो दूसरों के लिए बहुत गैर–मामूली तथ्य होगा, जिसे मिलाकर वह अंचल की समग्रता का निर्माण करता है। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में जब अमेरिकी उपन्यासकारों बिट हार्ट और हेरेट वियर स्टो आदि ने सुदूर अमेरिकी अंचलों को अपनी रचनाओं के केंद्र में रखकर उपन्यास लिखे तो उनका विशेष आग्रह इस बात को लेकर था कि अंचल के व्यक्तित्व पर लेखक का मध्यवर्गीय सोच हावी नहीं होना चाहिए। अंचल का वैशिष्ट्य पात्रों के माध्यम से, उनके जीवन और व्यवहार से उभरकर आना चाहिए –''लेखक के विचार की भूमिका वहाँ नगण्य रहनी चाहिए।''[1] मृणाल पाण्डे जी का उपन्यास पटरंगपुर पुराण जब आंचलिकता की कसौटी पर रखा जाता है तो कई स्तरों पर यह खरा उतरता है।

हिंदी उपन्यास के उद्भव से आज तक बहुत से सशक्त उपन्यासकार साहित्य में अपनी गहरी छाप छोड़ चुके हैं। उनमें स्वातंत्र्योत्तर काल की प्रसिद्ध लेखिका मृणाल पाण्डे जिनका व्यक्तित्व बहुआयामी है का स्थान सविशेष रहा है। यह भी उल्लेखनीय है कि मृणाल पाण्डे को साहित्य विरासत में प्राप्त हुआ। उनकी माता शिवानी साहित्य में एक सफल उपन्यासकारा के रूप में जानी जाती हैं। मृणाल पाण्डे जी ने भी साहित्य में विशेषकर उपन्यास में अपना सफल मुकाम बनाया है।

पटरंगपुर पुराण भी उनकी सशक्त लेखनी से रचा गया एक सफल एक पर्वतीय अंचल की गाथा है। 1983 में प्रकाशित यह उपन्यास एक पहाड़ी कस्बे की गाथा प्रस्तुत करता है। पर्वतीय अंचल कुमाऊं – गढ़वाल का पहाड़ी क्षेत्र है। उपन्यास का केंद्र पटरंगपुर नाम का गांव है। पटरंगपुर पुराण 11 पीढ़ियों की गाथा है। इन 11 पीढ़ियों की कहानी में पहाड़ी जीवन के बदलते स्वरूप का सघन चित्रण किया गया है। परिवर्तन का रूप आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक सभी आयामों में दिखाई देता है। सरकारी नीतियों और विकास संबंधी कार्यक्रमों से पहाड़ी जीवन परिष्कृत हुआ है।

लेखिका ने प्रस्तुत उपन्यास की कथावस्तु छः पर्वों में विभाजित की है। इसके साथ ही त्रेतायुग से मध्ययुग तथा अंग्रेजी हुकूमत से बीसवीं शताब्दी तक का सफर भी चित्रित किया है। काली कुमाऊं के राजा से लेकर भारत स्वतंत्रता प्राप्ति के समय का चित्रण करते हुए मृणाल जी ने कथा–रस का सफलतापूर्वक निर्वहन किया है। उपन्यास की केंद्रीय पात्र 'आमा' है। आमा के परिवार के फलने–फूलने और उजड़ने के चित्र के जरिए पटरंगपुर के फलने–फूलने तथा परिवर्तन की तस्वीर भी उकेरी गई है। पटरंगपुर की कहानी हमारी दादी–नानी के किस्सों की तरह दिलचस्प और कभी न खत्म होने वाली कहानी सी लगती है। पहाड़ी संस्कृति का ठेठपन, सादगी पाठकों के आंखों के आगे उभर जाते हैं। आमा के माध्यम से स्त्री का गौरवपूर्ण तथा संघर्षरत जीवन इस उपन्यास में है। कहानियों की चलती फिरती खान विष्णुकुटि की आमा की बोली में पगी यह कथा वास्तव में पुराण जैसी ठहरी। पटरंगपुरियों के लिए बरगद के पेड़ जैसी छाया ठहरी आमा की। त्रेतायुग के राम–रावण युद्ध की कथा के माध्यम से उपन्यास का प्रारंभ होता है।

आमा बताती है कि पटरंगपुर गांव का नाम कैसे पड़ा। "राजा के साथ में और भी आए! आए रेशम के कारीगर चीन देश से कीमू (शहतूत) के पेड़ पर पलने वाले रेशम के कीड़ों के पिटारी ले लेकर। एक मोहल्ले का मोहल्ला इन कारीगरों का बसाया गया। दिन–रात बुनने वाले हुए वे राजाजी और दरबारियों के लिए रेशमी पट्ट।[2] जब कपड़े पर रंग चढ़ाने का मौसम आता तब गप जमती थी। जैसे ज्यादा गप जमती थी। रंग उतना ज्यादा चढ़ता था। इससे नाम पड़ा पटरंगपुर।

प्रारम्भिक चरित्र लक्ष्मी का आता है। लक्ष्मी के जन्म से जिसके पिता रामदज्जी ब्राह्मण हैं पटरंगपुर आकर बसे हैं। एक खवासन रामदज्जी पर मोहित है। खवासन रामदज्जी को लेकर जंगल चली जाती है। लक्ष्मी की मां उसे पाल–पोस कर बड़ी करती है। लेखिका ने इस उपन्यास में तमाम ऐसे चित्र प्रस्तुत किए हैं जो समय के रंग–रूप तथा परिस्थितियों को और भी गहराई से उभारते हैं।

लेखिका वैदिक समय की बात बताते हुए कहती है कि उस जमाने में नदियों से भी सोना निकलता था –"नदियों की बालू से तक सोना निकलने वाला ठहरा तब जमीन ऐसी ठहरी, सुना कि बांये हाथ से आंख बंद करके भी नाज छींट दो तो ऐसी फसल हो जाने वाली हुई कि कहां जो धरो, वैसे जो समेटो।"[3]

स्त्री की स्थिति के प्रति स्त्रियों की ही सोच बहुत सधी हुई नहीं थी। लेखिका उपन्यास में स्त्री के नियति के विषय में बताते हुए कहती है –"लक्ष्मी एक के बाद एक तीन लड़कियों को जन्म देती है। लछमी की सास सुना हर घड़ी करने वाली हुई कि एक तो लड़ाई – भिड़ाई का जमाना तिस पर सिर पर ये तीन–तीन जने कैसे निपटेंगी ? करके ! और भी कहने वाली हुई कि जब लड़की होती है तो धरती सात अंगुल रसातल में धंस जाती है करके।"[4]

वहीं पुरुष यदि राक्षस भी हो तो उसे वंश को चलाने वाला कहा जाएगा –"हिडिम्बा राक्षसी से हुआ ठहरा उसका वह छोकरा ! राक्षस ठहरा तो क्या ? अपना खून तो हुआ है।"[5]

सामाजिक स्थिति का परिचय देते हुए लेखिका आमा के माध्यम से कहती है कि मनुष्य भी तब और और किस्म के हुए। सुना पहाड़ के बामणों के अगल–बगल पंख होते थे।"[6] समाज में राजाओं के साथ ब्राह्मणों को भी प्रमुखता मिलती थी। विद्या पर अधिकार भी श्रेष्ठ अर्थात ऊंची जाति को था। स्त्रियों को भी शिक्षा से दूर रखने के पक्ष में थे –चंदा की आमा ने कहा था, कि तब क्या बेद गायत्री मंत्र औरतों को भी दिए जाएंगे करके ? विद्यार्जन केवल भारत में ही प्राप्त हो ऐसा माना जाता था दूसरे देश में धर्म भ्रष्ट हो जाता है ऐसी मान्यता को भी मृणाल जी ने उपन्यास में चित्रित किया है –"विद्यार्जन करना तो ब्राह्मणों का हक्क ही ठहरा, पर पढ़ना ही हो तो काशी जाओ या मदुरै–मद्रास जाकर वेद पुराण पढ़ो, पर खबरदार सात समुंदर पार के राज मलेछों के राज में जाकर जात छन्न गवाना।"[7]

लेखिका ने पुराने समय की न्यायिक व्यवस्था पर लिखा है कि "बिना कचहरी बिना वकील घर–घर बंटवारे होते ठहरे। भगवान को या गोल्ल देवता को या इष्ट को साक्षी करके।"[8]

लेखिका ने नारी की स्थिति का चित्रण भी बड़ी बारीकी से किया है। प्रारंभ से अंत तक उपन्यास में नारी की स्थिति का एक परिवर्तित चित्र उकेरा गया है। स्त्रियां विवाह के बाद ससुराल की संपत्ति मात्र हैं। इस भाव का चित्रण लेखिका ने आमा के द्वारा चित्रित किया है – अहा मैके का मोह छोड़ता जो क्या है हम औरतों को ? खून का रिश्ता ठहरा हो, गगगगगगग सुना ऐसे रोये आमा और भाई कि छत की बिल्लियों और काठ के म्वालें तक गीली हो गयीं।"[9] परंतु इस बात पर बडज्यु क्रोध इतना हुआ कि "कहने वाले हुए कि हमारे लिए यह अब मर गई करके गगगगगगग चनिका ने ही लाख मनामनु कर आमा का घट श्राद्ध कराके उनका दोबारा तुलसी–विवाह हो और यह पुनर्जन्म माना जाए।"[10]

इसके साथ ही बहु विवाह पर भी लेखिका के लेखनी चली है। पटरंगपुर में बहु विवाह प्रथा थी। वहां के मर्द दूसरी–तीसरी शादी या चौथी शादी भी कर लेते थे। संतानों की संख्या पर बहुत थी तथा सही तरीके से पालन पोषण न होने से उनकी मृत्यु भी हो जाती थी।

पटरंगपुर पुराण को यदि राजनीतिक परिदृश्य के अंतर्गत देखे तो समूचे राजनीतिक परिदृश्य हमारे समक्ष उभर आते हैं – त्रेतायुग से लेकर अब तक देश में आने वाले परिवर्तन को लेखिका ने बहुत ही बारीकी से दिखाया है। राजनीति में परिवर्तन की दशा का भी वर्णन किया गया है। राजनीतिक परिदृश्य में पहले ब्राह्मणों का वर्णन जिन पर प्रारंभिक व्यवस्था टिकी थी फिर मुसलमानों का आगमन परंतु ये अपनी पैठ बहुत गहरी नहीं बना पाए और अंग्रेजों का आगमन हुआ। अंग्रेजों ने अपने सुविधा के लिए अंग्रेजी शिक्षा को बढ़ावा दिया। भारत कई वर्षों के बाद स्वतंत्र हुआ। शासन व्यवस्था में भी परिवर्तन हुआ। 14 अगस्त 1947 और 15 अगस्त 1947 में ज़्यादा फर्क नहीं आया। क्योंकि मानसिकता गुलाम बनाने की ही ठहरी। ग्यारह पीढ़ियों का यह राजनीतिक बदलाव उपन्यास में दिखाई पड़ता है।

उपन्यास की आंचलिकता उसके सांस्कृतिक परिदृश्य में बखूबी उभर कर आई है। पटरंगपुर पुराण उपन्यास के माध्यम से मृणाल जी भारतीय गांव की संस्कृति को प्रस्तुत करती हैं। ब्राह्मणवाद, जातिवाद, स्त्री के प्रति मानसिकता, तंत्र–मंत्र, टोना–टोटका, अंधविश्वास आदि सब पटरंगपुर की संस्कृति में समाई थी। पौराणिक काल में यह सभी गैर–जरूरी चीजें बहुत महत्व रखती थी। अंधविश्वास के विषय में लिखते हुए लेखिका आमा के माध्यम से बताती हैं कि –"सुना वहीं कहीं एक खस जात की औरत थी जिसने रामदज्जी को पूजा के लिए झरने के किनारे बैठा देख लिया था गगगगगगग सुना ठगी सी रह गई उनका रूप देखकर। माया विद्या की गजब जानकार ठहरी वह ! चट्ट घर जाकर कौवे की जीभ, कबूतर के पंख और उड़ती हुई चिड़िया की आंख से, सुना, उसने एक और एक गजब का जंतर बनाया, उसे सात रात मसान में साधा गगगगगगगग सीधा अग्निबाण जैसा सनसनाता हुआ वो मंतर रामदज्जी के मरमस्थल पर जाके लगा। जैसे लगा लछमन को शक्ति लगी थी।"[11]

टोने–टोटके का चित्रण करते हुए बाल–विधवा तितुली कैंजा का वर्णन करती है –"ऐसे टोने–टोटके बहुत जानने वाली हुई वे। बच्चे के पेट में मरोड़ हो, या दूध नहीं पीवै, या कि दूध पिलाने वाली मां की बगल में गिल्टी पड़ जाए, गगगगगगगग तो सब तितुली कैंजा को पुकारने वाले हुए।"[12]

उन दिनों बीमारियों को दैवीय कोप माना जाता था – "चानिका बिचारे शीतला के परकोप से आंखों के जोत खो बैठे ठहरे। सब कहने वाले हुए कि कोई देवी कोप जैसा लगा ठहरा विष्णुकुटी वालों को उन दिनों।"[13]

पहाड़ी संस्कृति में छुआछूत का वातावरण भी खूब होता है। लेखिका ने उपन्यास में यह चित्रित किया है – चंपा बुबू मात्र जानवरों की भयंकर छूत मानने वाली हुई। बाहर उनकी भात पकाने वाली धोती सूखने डली हो, और उस पर कौवा बैठ गया तो पांच बेर आम से उसे धुलवाने वाली हुई गगगगगगगग छुआछूत का अति विचार करने वाली ठहरी चंपा बुबू।"[14]

पटरंगपुर रीति–रिवाजों से परिपूर्ण गांव है। वहां हर छोटे से छोटे त्यौहार पर उत्सव जैसा माहौल होता था। चाहे वह खानपान हो या रहन–सहन सब में आंचलिक खुश्बू है –"सुना अद्भुत ऐपण (अल्पना) लिखती थी। दरवाजों पर म्वाल पूरना हो, या गणेश जी और रिद्धि–सिद्धि वाला ज्यूँति का पट्टा लिखना हो, या की जन्माष्टमी या अमुक्ता भरण पंचमी का पट्टा बनाना हो। आमा के हाथ का जैसा काम पूरे पटरंगपुर में कोई नहीं कर सकने वाला हुआ।"[15]

गांव में रसोई का बहुत महत्वपूर्ण स्थान होता है। वैसे तो शहरों में भी होता है लेकिन जो संवेदना गांव वालों को रसोई के प्रति होती है वह नगर में नगण्य है –"रसोई उन दिनों आजकल के जैसे खड़ाखड़ी पकाने के बिलास्त (बालिश्त भर) के कमरे जैसा जो क्या होने वाले हुए। उन दिनों तो जितना बड़ा दीवानखाना उतनी ही बड़ी रसोई होने वाली हुई। वही अटालियों में बैठ के खाने वाले हुए लोग।"[16]

लेखिका ने खानपान का वर्णन भी बहुत सुंदरता से किया है – "बुढ़ापे पर कर्मकांडी ठहरी ऐसी, कि बिना गंगाजल का छींटा दिए साबूदाना भी नहीं खाने वाली हुई । एक टाइम पक्का चोखा खाना खाने वाली हुई वह गगगगगगगग शकरकंद के गुलाबजामुन मौमफली की बरफी, मखाने की खीर, जाने क्या–क्या।"[17]

विक्टोरिया कॉटेज के भोज का विवरण देते हुए लेखिका पहाड़ी खानपान की आंचलिकता प्रस्तुत करती हैं – "कंटरों के कंटर शुद्ध देसी घी, बोरों के बोरे सालम की बासमती, चार प्रकार की बादाम–पिस्ता, केसर वाली बनारसी मिठाई, महोबे का पान, नखलऊ शहर के आम, हाथी के कान जितनी पूड़ियाँ, चक्की के पाट जितने कुरकुरे नरम सिंगल, खस्ता कचौड़ियाँ जो बे दांत के बुड्ढे भी बिना तकलीफ के निगल जाने वाले हुए रायता चटनी अचार पांच मेल की तरकारियां, क्या जो नहीं ठहरा उस भोज में।"[18] गुड़ के पूए तो कहीं फसलों की बात करते हुए लमा–लम बासमती, गहत भट्ट की दाल, माड़ो का आटा, शहद, खुमानी, मीठा बादाम इत्यादि का भी विवरण देती हैं।

आंचलिकता के अंतर्गत गीतों का वर्णन भी पटरंगपुर में सुनाई देता है –"होलियों में पदम के सुर के बिना ठाडी होली (खड़े होकर गाई जाने वाली होली) जमने ही वाली नहीं हुई – जल कैसे भरूं जमुना गहरी, ठाडी भरो तो श्याम लखत है, बैठी भरूं भीजे चुनरी।"[19] वहीं परिवर्तन के साथ ही गीतों के भाव में भी बदलाव दिखता है – "आग लागौ सरकारा डबल में पड़ो टोट"। वहीं बच्चों की अठखेलियां भी लेखिका ने चित्रित किए हैं। "बारिश के समय बच्चे जोर–जोर से गाते हैं – घाम (धूप) दिद्दी इतखै आ, बादल भिन्ना (जीजा) उतखें जा।"[20]

रिश्तों का संबोधन भी लेखिका ने पहाड़ी परिवेश अनुसार ही रचा है। जैसे – आमा, बड़ज्यु, ईजा, बुबू, दज्ज्यु, बोज्यू (भाभी) इत्यादि। आंचलिक पहनावे तथा आभूषण का विवरण भी उपन्यास में आंचलिकता को मुखर करता है। जैसे लाल घाघरा, पिछौड़ा, कार चोबी की टोपी, पेटिकोट, पूरी आस्तीन के ब्लाउज, किमखाब के जामे, मोहन माला, सोने के धागुले (कड़े), नथ रामनवमी इत्यादि का वर्णन पटरंगपुर को पाठक के समक्ष पहाड़ी परिवेश के साथ प्रस्तुत कर देता है। गढ़वाल की नथ का वर्णन – सत्रे तोले की तो सुना नथ।[21]

आंचलिकता का सबसे बड़ा रूप भाषा में छिपा होता है। जैसे रेणु ने मैला आंचल में पूर्णिया की भाषा को जस का तस रखा है वैसे ही पटरंगपुर की भाषा भी है। प्रारंभ से अंत तक हिंदी मिश्रित पहाड़ी भाषा जो कुमाऊं के परिवेश को उन्मुक्त रूप उभार देता है। भाषा का रस वह भी आंचलिकता के स्तर पर पाठक को उन्मुक्त आनंद प्रदान करता है – "विद्या की लड़की की बड़ी लड़की पेट से ठहरी उस बखत। परकिरत के नियम जो क्या बदलने वाले हुए ? चंदा नाम ठहरा लड़की का, सुंदर सुमुखी हुई देखने में गगगगगगगग तो ठिक्क ब्रह्म मुहूर्त में चंदा की लड़की हुई। पैदा हुई तो सुना ना रोई ना चिल्लाई गगगगगगगग भगवती पड़ा नाम, धनुर्धर राशि ठहरी उसकी, बृश्चिक लग्न हुआ। सास ने सुना, बड़ा मुंह जैसा बनाया, कि लड़की है हुई करके।"[22]

भाषा में मुहावरों के प्रयोग से जीवंतता आ गई है । जैसे उत्तम खेती, मध्यम बान, लिखित चाकरी, भीख निदान ! बामण होकर भी पटरंगपुर के बामण, बामण जैसे कहां रहे ?[23] "पर कहते हैं ना काला बामण, गोरा शूद्र इन्हें देख के कांपे रूद्र। तालघर के एक पुरुषोत्तम ज्यू करके हुए।"[24] समय होत बलवान जगत में समय होत बलवान, आमा कहने ही वाली ठहरी।[25]

ध्वन्यात्मक भाषा का प्रयोग भी उपन्यास में हुआ है – "गृहस्थ लोग धिर–धिर–धिर बाजार सौदा–सुलुफ लाने चल दिए"[26], तथा "आज शाम को 5:30 बजे, अल्फ्रेड सनीमा, सड़क के पाऽऽऽस, माय हीरो नाम की फिलिम दिखाई जाएगी।"[27] इसके साथ ही 'ठहरा' 'रखा' शब्द के प्रयोग की बहुलता है जो कुमाऊँ गढ़वाल क्षेत्र में बहुत बोला जाता है। इस प्रकार भाषा की आंचलिकता तथा मुहावरों के प्रयोग से उपन्यास और भी निखर गया।

आंचलिक संस्कृति में परिवर्तन एवं प्रभाव

पटरंगपुर की संस्कृति पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव जो परिवर्तन का आगाज कर रहा है स्पष्ट दिखाई दे रहा है। भारतीय संस्कृति भले ही अपनी सभ्यता के गुण गाए परंतु वह पटरंगपुर के वासियों के भारतीय पाश्चात्य संस्कृति में अवश्य रम जाती है। इसका परिणाम सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों होता है। अंग्रेजी हुकूमत ने अंग्रेजी भाषा का प्रभाव फैलाया। लोग इसकी गिरफ्त में आए। आर्थिक परिवर्तन भी हुए, लोग बाहर जाकर कमाने भी लगे।

स्त्रियों की सोच में भी एक बड़ा परिवर्तन लेखिका ने जाहिर किया। उपन्यास में हिरुवा डॉक्टर की भांजी ने अपने अधिकार की मांग की। जहां औरतों को ज्यादा हंसने पर कलछी से दाग दिया जाता था वहां स्त्री अदालत में अपने पति को नपुंसकता के कारण तलाक की मांग करे तो सकारात्मक परिवर्तन का रूप अवश्य दिखाई देता है – "मेरा पति नपुंसक है मुझे तलाक चाहिए करके। डॉक्टरी जांच हुई सुना, और सच्ची–सच्ची तलाक हो गया दोनों का। कमाऊ ठहरी लड़की।"[28]

स्त्री की आत्मनिर्भरता पटरंगपुर के परिवर्तन का रूप है। तो वहीं विदेशी अंधानुकरण में नशा इत्यादि करना भी प्रारंभ हुआ। यह भी लेखिका ने नरेंद्र के माध्यम से दिखाया है। इसी प्रकार पानी की समस्या, छुआछूत की समस्या, अंधविश्वास तथा अशिक्षा पर गहरी चोट की गई है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि संस्कृति आंचलिकता का विधायक तत्व है। संस्कृति मानव द्वारा निर्मित एक अमूल्य धरोहर है। मानव के क्रियाकलापों का दर्पण है। लोक–संस्कृति के द्वारा अंचल की संपूर्ण मानसिकता, जीवन प्रणाली का सहज, पारदर्शी, स्वाभाविक तथा सुंदर चित्र सामने आता है। पटरंगपुर पुराण में लोक–संस्कृति का सूक्ष्म, यथार्थ तथा संवेदनशील चित्रण हुआ है। कुमाऊं गढ़वाल के विशेष प्राकृतिक सौंदर्य और उस से लिपटी हुई संस्कृति से संबंधित वहां के रीति–रिवाज, खान–पान, रहन–सहन, वेशभूषा, रूढ़ियां, धार्मिक मान्यताएं, गीत, नृत्य, खेल–तमाशा, पर्व आदि के सूक्ष्म, समग्र एवं हृदयग्राही अंकन से परिपूर्ण पटरंगपुर पुराण उपन्यास ने आंचलिकता के स्तर पर अपना प्रमुख स्थान बनाया है।

सन्दर्भ सूची

1. हिन्दी उपन्यास का विकास –मधुरेश पृ. 139
2. पटरंगपुर पुराण – मृणाल पाण्डे पृ. 15
3. वही – पृ. 9
4. वही – पृ. 17
5. वही – पृ. 10
6. वही – पृ. 9
7. वही – पृ. 51
8. वही – पृ. 31
9. वही – पृ. 53
10. वही – पृ. 54
11. वही – पृ. 13

12. वही – पृ. 107
13. वही – पृ. 59
14. वही – पृ. 45–46
15. वही – पृ. 47
16. वही – पृ. 46
17. वही – पृ. 96
18. वही – पृ. 77
19. वही – पृ. 102
20. वही – पृ. 118
21. वही – पृ. 35
22. वही – पृ. 35
23. वही – पृ. 18
24. वही – पृ. 54
25. वही – पृ. 59
26. वही – पृ. 118
27. वही – पृ. 101
28. वही – पृ. 137